अभ्यास

1. स्तंभ 'क' को स्तंभ 'ख' से मिलाइए

स्तंभ 'क'	**स्तंभ 'ख'**
(क) जड़	1. पवित्रता
(ख) रोटी	2. ऊँचाई
(ग) शक्ति	3. गहराई
(घ) पेड़	4. मौन

2. पेड़ कवि से क्या कहते हैं?

3. जड़ ने कभी क्या नहीं कहा ?

4. दुनिया में रोटी से इच्छा कुछ भी नहीं, ऐसा क्यों?

5. 'पवित्रता' पवित्र में 'ता' प्रत्यय लगने से बना है। इसी तरह 'लघुता', 'प्रभुता' जैसे शब्द भी 'लघु' और 'प्रभु' में 'ता' प्रत्यय लगने से बने हैं। प्रत्यय किसी शब्द के अंत में लगते हैं। आप 'ता' प्रत्यय से इसी तरह चार अन्य शब्द बनाएँ।

6. गहराई में कौन प्रत्यय है, इसे भी पहचानें।

7. पेड़ कहते हैं मुझसे, कहती हैं जड़े, कहता है अन्न; इन अंशों से पेड़, जड़ और अन्न के लिंग का पता चल जाता है। पेड़ और अन्न पुल्लिंग हैं जबकि जड़ स्त्रीलिंग। इन शब्दों से ऐसे वाक्य बनाइए जिनसे इनका लिंग पुनः स्पष्ट हो जाए।

8. 'शक्ति होती है मौन' का क्या अर्थ है?

9. जड़े बेहद गहराई से आती हैं, फिर भी वे यह नहीं कहती हैं। इससे जड़ों की कौन–सी विशेषता उभरकर आती है?

10. भाव स्पष्ट करें–

और रोटी कभी नहीं बोलीः

'दुनिया में क्या है मुझसे अच्छा।'

11. इस कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखें।

12. इस कविता में पेड़, जड़ और अन्न से कवि का संवाद है। कवि को इनसे सीख मिलती है। यदि यह संवाद हवा, नदी और फूल के साथ होता तो उनसे क्या सीख मिलती, सोचिए और लिखिए।

13. उत्पत्ति के आधार पर इन शब्दों की प्रकृति बताएँ–

शक्ति, मौन, गहराई, ऊँचा, जड़, दुनिया